इकाई 6 भाषण शैली

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 भारत की जिम्मेदारी हम सब पर है

6.3 भाषण की शैलीगत विशेषताएँ

- 6.3.1 पुनरावृत्ति
- 6.3.2 वाक्यक्रम
- 6.3.3 उपवाक्य
- 6.3.4 संबोधित करना

6.4 संबोधनकारक

6.5 सारांश

6.6 शब्दावली

6.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.8 अभ्यासों के उत्तर

अनुकार्य

6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- राष्ट्र की एकता और उन्नति के विषय पर केंद्रित भाषण के अध्ययन द्वारा इस विषय को स्वयं अपने शब्दों में कर सकेंगे;
- विषय से संबंधित शब्दावली का उचित प्रयोग सीख सकेंगे;
- भाषण की शैलीगत विशेषताएँ बता सकेंगे;
- भाषण की भाषा और लिखित भाषा के अंतर को पहचान सकेंगे; और
- संबोधनकारक को परिभाषित कर सकेंगे और उसका सही प्रयोग कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

आपने इससे पहले की इकाई में परिवार के बारे में पढ़ा है। परिवार को समाज की आधारभूत इकाई कहा गया था और राष्ट्र समाज का ही एक बृहद् रूप है। हम सभी भारत नाम के राष्ट्र के नागरिक होने के कारण एक-सी राष्ट्रीय भावना में बँधे हैं। अपने राष्ट्र के प्रति हमारा प्रेम ही हमारी कर्तव्य और दायित्व की भावना को निर्धारित करता है। 15 अगस्त, 1947 को जब देश आज़ाद हो गया तो इसकी स्वतंत्रता की रक्षा और प्रगति का दायित्व सभी नागरिकों पर आ गया। निश्चय ही प्रगति का मार्ग चुनौतियों से भरा हुआ है। ये चुनौतियाँ क्या हैं और हमारी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं तथा आजादी के संघर्ष से हमें क्या शिक्षा मिलती है, यह सब आप इस इकाई में जानेंगे।

इस इकाई में आप स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी का भाषण पढ़ेंगे जो उन्होंने 15 अगस्त, 1966 को दिया था। यह प्रधानमंत्री के रूप में लाल किले से दिया गया उनका पहला भाषण था। इसमें उन्होंने बताया है कि राष्ट्र की एकता और उन्नति की ज़िम्मेदारी सभी भारतवासियों पर है।

चूँकि यह पाठ मूल रूप में "भाषण" था इसलिए इसे अविकल रूप में दिया जा रहा है ताकि आप भाषण के प्रवाह को उसकी पूर्णता में ग्रहण कर सकें। इस भाषण के द्वारा आप भाषण की शैलीगत विशेषताओं और उनसे जुड़े व्याकरण संबंधी विशिष्ट प्रयोगों का अध्ययन भी करेंगे।

साथ ही, आप संबोधनकारक के नियम जानेंगे और उसका प्रयोग करना भी सीखेंगे।

6.2 भारत की जिम्मेदारी हम सब पर है

1) इस ऐतिहासिक दिन पर, इस ऐतिहासिक स्थान पर मैं अपने देशवासियों का अभिवादन करती हूँ। 19 साल हुए भारतवर्ष ने एक नया जीवन लिया। इतिहास के कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जब इसका हर एक देशवासी के जीवन पर गहरा असर पड़ता है। वैसे आज का दिन, यह 15 अगस्त का दिन, भारतवर्ष के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इस दिन हमने एक नया पन्ना पलटा, एक नये जीवन का आरंभ हुआ। 19 साल हुए इसी जगह पर हमारे पहले प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने इस तिरंगे को फहराया, आजादी की ज्योति जलायी, आजाद भारत की बुनियाद डाली।

2) यहाँ पर खड़े होकर हमें याद आती है उन नेताओं की और उन बेशुमार लोगों की, जो आजादी के आंदोलन में, हिन्दुस्तान के कोने-कोने से, सब कुछ भुला कर कूद पड़े, जान त्यागी, परिवार त्यागा, सब कुछ दे दिया। कितने बड़े इन्सान थे और कितना बड़ा था उनका त्याग। आज उनकी याद आती है। उनके त्याग, उनके साहस और हिम्मत के कारण आज हम आज़ाद हैं और हमारे ऊपर यह भारी जिम्मेदारी है कि उन्होंने जो रास्ता दिखाया उस रास्ते पर हम चलें।

3) यहाँ खड़े-खड़े भारत की लंबी कहानी याद आती है। पुराना इतिहास याद आता है। इतने वर्ष पहले भारत ने दुनिया को एक नेतृत्व दिया, चाहे विज्ञान हो, चाहे दर्शन हो, चाहे किसी भी दिशा में, भारत बहुत आगे था, भारत बहुत महान था। आज यह सब बातें हमारे सामने हैं और हमारी और आपकी जिम्मेदारी है कि कोई काम ऐसा न करें कि लंबे इतिहास की इस शानदार कहानी पर किसी तरह का धब्बा पड़े।

4) आज सबसे ज्यादा याद आती है हमारे राष्ट्रपिता की, महात्मा गांधी की। आपको मालूम है कि जवाहरलाल नेहरू ने उनको एक दफा जादूगर कहा था और जवाहरलाल नेहरू विज्ञान को मानते थे, नयी दुनिया को मानते थे। तब भी वह महसूस करते थे कि गांधी जी के संदेश में कितना बल है और हमारे समय के लिए वह संदेश, वह रास्ता आज कितना उपयोगी है। वह संदेश क्या था। तीन छोटे-से शब्द अहिंसा सत्य और स्वदेशी। मैं चाहती हूँ कि इसको हम आज का भी संदेश मानें।

5) अहिंसा मायने क्या। शांति, एक दूसरे से मिलजुल कर रहना, एक दूसरे की विचारधारा को आदर देना, बाहर के देश जो दूसरी विचारधारा के भी हैं, उनका भी आदर करना, उनसे भी दोस्ती करना, अपने विधान के अनुसार रहना, यह सब बातें इसी छोटे से शब्द में आती है।

6) दूसरा सत्य कि हम जीवन कैसे साफ रखें। कैसे हम हर एक काम रीति से करें कि देश को उसका लाभ हो। हमारे जीवन में झूठ न आये, दम्भ न आये। कोई ऐसी बात न हो जिससे भारत माता को धब्बा लगे। सत्य में एक बात और है — सत्य में निडरता

उतना ही ज़रूरी है कि हमारे अंदर निडरता आये। हम गलतियों से न डरें, परिवर्तन से न डरें। हम हमेशा नया रास्ता लेने को तैयार रहें, नये विचार लेने को तैयार रहें। देश की समस्याओं को समझें, क्योंकि उनको समझ कर ही हम सही रास्ता ढूँढ सकते हैं और उस रास्ते पर चल सकते हैं। यह एक ऐसा **उसूल** है जो हमें एक सही रास्ता दिखाता है।

7) तीसरा स्वदेशी — आप सब जानते हैं कि हमारे देश की आर्थिक स्थिति आज क्या है। आपको मालूम है कि उसको हम तभी सुधार सकते हैं, अगर हम स्वदेशी का उपयोग करें। स्वदेशी का मतलब यह नहीं कि हम बाहर का माल न खरीदें, बल्कि उसके यह भी मायने हैं कि हम बचत करें, जो भी साधन हैं, जो भी तरीके हैं, और अगर कोई ऐसा तरीका है जिसके इस्तेमाल करने से विदेशी माल की जरूरत है तो हमारे नौजवानों को उसके लिए नया तरीका ढूँढना चाहिए, नया रास्ता ढूँढना चाहिए। यह ठीक है कि जिम्मेदारी सरकार की है, लेकिन उतनी ही जनता की भी है। अपने घर में, अपने गाँव में, अपनी दुकान में, किस तरह से स्वदेशी को बढ़ाएँ, अपनी भावना में कैसे स्वदेशी लाएँ यह चीज है, ये बड़े उसूल हैं जिन पर हमको चलना है।

8) हमने **समाजवाद** का रास्ता लिया, इसलिए कि इस देश की गरीबी को और किसी तरह से दूर नहीं किया जा सकता और हमारे समाजवाद में प्रजातंत्र का एक बड़ा हिस्सा है, बल्कि वह उसकी बुनियाद है। **प्रजातंत्र** हर एक व्यक्ति को एक हक देता है, एक बड़ा हक, एक बड़ा अधिकार और उसको सफल बनाने के लिए कर्तव्य का भार भी आता है। हमारे बहुत से कार्यक्रम हैं, लेकिन जो एक भारी प्रश्न है, वह आज गरीबी का **प्रश्न** है। हम दृढ़ता से चलकर उसका सामना कर सकते हैं और मेरी आप सबसे प्रार्थना है कि इसमें हमारा साथ दें।

9) हमारे किसान भाई आप हैं देश की बुनियाद, आपकी जनसंख्या **सबसे** अधिक है। आप हैं हमारे अन्नदाता। हमारा कार्यक्रम चले या न चले, **यह** आप पर निर्भर है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप नये तरीकों को, नये रास्तों को अपनाएँ और चाहे उत्पादन बढ़ाने का काम हो चाहे गाँव के **ग्रामीण** जीवन को सुधारने का सवाल हो उसमें सहयोग दें।

10) मजदूर भाइयों, आप का काम कुछ कम नहीं है और आपकी ज़िम्मेदारी भी बहुत बड़ी है। चाहे देश की उन्नति का काम हो, आपके कारखानों की पैदावार पर वह निर्भर है। आप पैदावार बढ़ाएँगे, उत्पादन बढ़ाएँगे तो आपकी स्थिति भी सुधरेगी और देश की स्थिति भी सुधरेगी और हमारे कार्यक्रम और आगे बढ़ सकेंगे।

11) इस समय हमारे बहादुर सिपाही, हमारी बहादुर सेना हमारी सीमा पर डटी खड़ी है। हमारे दिल उनके साथ हैं। लेकिन हम समझते हैं कि देश की सीमा खाली हिमालय पर नहीं है। देश की सीमा, सीमा पर ही नहीं है, बल्कि देश की सुरक्षा की सीमा, देश को बचाने की सीमा हर गाँव में है, हर कस्बे में है, हर शहर में है। इसलिए जैसे किसान भाइयों की मदद चाहिए, जैसे हमें अपने मजदूर भाइयों की मदद चाहिए, उसी तरह से जो और हैं, चाहे वह कारखानेदार हों, व्यापारी हों, चाहे अध्यापक हों, या जो भी काम करते हों, उनकी भी भारी जिम्मेदारी देश के लिए है। वह अपने फ़र्ज को अदा करें, राष्ट्र-जीवन में सच्चाई लाएँ सत्यता लाएँ एकता लाएँ। इस तरह से हमारे दूसरे भाई भी हैं। हमारे कलाकार हैं, लेखक हैं, विचारक हैं, उनकी जिम्मेदारी दूसरे तरह की है और वह जिम्मेदारी है कि नयी पीढ़ी को, सारे देश को मार्गदर्शन दें, सीधे रास्ते पर चलना सिखाएँ, अपना मन ऐसा खुला रखें कि बाहर के विचार आ सकें और बाहर भी हमारे जा सकें यह भारी जिम्मेदारी उनकी आज है।

12) आज समय नहीं है कि हम रुक जाएँ, बल्कि आज हमें आगे बढ़ना है। हमारे देश के कुछ ऐसे तबके हैं जो सदियों से पिछड़े रहे हैं, हमारे हरिजन भाई और बहन, हमारे आदिवासी भाई और बहन, हमारे पहाड़ के लोग, हमारे **अल्पसंख्यक** लोग, उनकी तरफ हमारा विशेष ध्यान है। उनके लिए कार्यक्रम बने हैं, लेकिन हमें अच्छी तरह से मालूम है कि कितना ज्यादा और करना है। कितनी उनकी तकलीफें हैं, कितनी

उनकी परेशानी हैं, खास तौर पर इस सूखे के साल में उनको जो तकलीफें हुई वह जरूर हुई। हम यह जानते हैं कि जब तक हम इनको ऊपर नहीं उठाएँगे, तब तक हम नहीं उठ सकते। जब तक वे आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक देश भी आगे नहीं बढ़ सकता। तो उनको उठाना जरूरी है। आपसे भी हमारी विनती है कि हम आपकी सहायता करें और हमारी आप सहायता कीजिए।

13) फिर हमारी प्यारी बहनें हैं, जो हरेक तबके की हैं, हरेक काम में हैं और जिनके ऊपर काम का बोझ है और उसके ऊपर है घर चलाने का बोझ, नई पीढ़ी को बढ़ाने का बोझ, महंगाई का सामना करने का बोझ, कमी का सामना करने का बोझ, देश की आधी जनता वे हैं। सदियों से उन्होंने इस देश को शक्ति दी, सदियो से उन्होंने इस देश की सभ्यता को ऊँचा रखा। आज भी हम उनकी तरफ देखते हैं कि हमारी सभ्यता, परंपरा की ओर वे ध्यान दें, उसको ऊँचा रखें। आज भी उनकी तरफ हम देखते हैं— वे हमको शक्ति दें, अपनी सहनशक्ति से हमें मजबूत करें। आज भी हम उनकी तरफ देखते हैं, बहुत से गुणों के लिए जिसके लिए भारतीय महिला प्रसिद्ध रही हैं।

14) हमारी आजादी के आन्दोलन में बहुत से लोग थे उनमें से बहुत से आज हमारे बीच नहीं हैं, उन सबको हम **श्रद्धांजलि** पेश करते हैं। बहुत से हैं, जो बूढ़े हो गये हैं और जिनका तजुर्बा है, जो हमारी सहायता कर सकते हैं। अब एक नई पीढ़ी हमारे सामने है। उसने आजादी का आंदोलन नहीं देखा, उसने नहीं पहचाना कि हमारे दिलों में क्या आग थी, हमारे मन में क्या प्यास थी, हमारी आत्मा की क्या माँग थी। लेकिन चाहे हम बूढ़े हों, चाहे छोटे हों, चाहे हमें आजादी के पहले दिन याद हों, चाहे न मालूम हों, आज के भारत की जिम्मेदारी हम सब पर है। आज हम चाहें, न चाहें आज के भारत को चलाने का काम हरेक नागरिक पर है— छोटे बच्चों पर भी है और बड़ों पर भी है और अगर हम इस काम को मिलकर एकतापूर्वक अपनी पूरी शक्ति लगाकर करें, तो हम निश्चय ही इस काम को पूरा कर सकते हैं।

15) हमारे जो प्रश्न हैं, वे बहुत बड़े हैं, लेकिन ऐसे नहीं हैं कि जो हिम्मत से काबू नहीं कर सकें उन पर। वह हिम्मत भारत में है और आज उसका हमें उपयोग करना है। अगर सब लोग इस बड़े काम को मिलकर उठायेंगे तो मैं मानती हूँ कि हमारे ऊपर जो दबाव हैं, वे खत्म हो जाएँगे। ये दबाव हैं बाहर के, दबाव है देश की गरीबी का, दबाव है आपस में फूट का और बहुत से ऐसे दबाव और कठिनाइयाँ हैं। लेकिन हमारे बच्चे उन सब दबावों को हटा सकते हैं, अपने रास्ते से और आगे बढ़ सकते हैं, समाजवाद के रास्ते पर।

16) एक लड़ाई हमारी सीमा पर है लेकिन दूसरी लड़ाई इतने ही महत्व की हमारे देश में है। वह गरीबी से लड़ाई और पिछड़ेपन से लड़ाई है। वह लड़ाई हम कैसे लड़ें, जब तक नये विचारों को न अपनाएँ, जब तक हम अपने बीच से अंधविश्वासों को मिटा न दें और जब तक हम निश्चय न कर लें कि जो हमें करना है, देश को आगे बढ़ाने के लिए, चाहे कितने त्याग की जरूरत हो, कितनी कठिनाई हो, उसको करने के लिए हम तैयार हैं और हम में से हरेक उसकी जिम्मेदारी लेगा। यह जिम्मेदारी हरेक व्यक्ति की है, और अब ऐसा समय आ गया है कि उस जिम्मेदारी को हम छोड़ नहीं सकते। हम देश के जीवन में दर्शक बनकर नहीं रह सकते, हम उसके सिपाही हैं।

17) हमारे नौजवान हैं, हमारे विद्यार्थी हैं जो लड़ाई के समय अपना जीवन देने को तैयार हो गये थे, खून से सबक लिखने को तैयार थे। मैं कैसे मानूँ कि आज वह भारतमाता की दुःख भरी पुकार नहीं सुनेंगे। आज जो भारतमाता की कठिनाइयाँ हैं, उनको दूर करने को हम तैयार नहीं होंगे। आज बनाने का दिन है भारतमाता के नये जीवन को, न कि तोड़ने का दिन।

18) यहाँ हम भारत की राजधानी में एक ऐतिहासिक स्थान पर मौजूद हैं। लेकिन हमारे साथ आज बहुत से लोग हैं, खाली दिल्ली शहर के नहीं, बल्कि भारत के शहरों और गाँवों के, हमारी तरफ सबका ध्यान जा रहा है। भारत का बड़ा इतिहास है और आगे

भी भारत का उज्ज्वल भविष्य है। हम उस भविष्य को कैसे ऊँचा बनाएँ, हम अपनी नीतियों को, अपने कार्यक्रमों को, अपने आदर्शों को सफल रख सकेंगे या नहीं, इसका जवाब हर नागरिक अपने दिल से पूछे। अगर उसका दिल कहता है कि वह यह काम कर सकता है, तो निश्चित ही हम कर सकते हैं। लेकिन अगर उसके दिल में शंका है, कोई झिझक है, तो यह काम हमारे लिए मुश्किल हो जायेगा। इसलिए मेरी आज आपसे प्रार्थना है कि इस शुभ दिन पर, इस शुभ अवसर पर, हम यह दृढ़ निश्चय करें कि इन चीजों का हम सामना एकता से, अपनी पूरी शक्ति से करेंगे और जिस रास्ते पर हमको भारत को लाना है, देश की सुरक्षा दूसरे देशों से, बाहरी शक्तियों से, अंदर की कमजोरियों से जो करनी है उसका हम जोरों से सामना करें। यह कोई आसान काम नहीं है और न यह हम कभी समझते थे कि यह आसान काम है। हमारी जो कमियाँ हैं वह हो सकता है कि कुछ गलतियों से हुई हों, हो सकता है काम और तेजी से हो सके और अच्छा हो सके लेकिन साथ-साथ हमको यह भी मानना है कि हमारी बहुत सी कठिनाइयाँ हैं वह हमारी कामयाबी के कारण हैं, हम आगे बढ़े ही इसलिए हैं। अगर हम रुके रहते, खड़े रहते तो शायद ये कठिनाइयाँ नहीं बढ़तीं। लेकिन दोनों रास्तों को देखकर, आँखें खोलकर हमने यह आगे बढ़ने का रास्ता चुना, हमने कठिनाइयों का रास्ता चुना।

19) आज हम प्रण लेंगे कि हमारी आजादी के जो सिपाही थे और जी इस नयी लड़ाई में हैं वे सब सिपाही हैं और तब हमारे अन्दर जो एक दीवानापन था, उस दीवानेपन को आज हम फिर अपने अंदर लाएँ। आज वह क्रांति पैदा करें, जो हमें बैठने न दे, जो सदा हमारे कान, दिल और मन में कहे कि उठ चलो भारतमाता इंतजार कर रही है, भारतमाता तुम्हारी माँग कर रही है। इस क्रांति की आज जरूरत है। मैं जानती हूँ कि यह भावना हमारे अंदर है, अगर इसको दबाया नहीं गया, अगर इसको उलटे रास्ते पर न जाने दिया गया। आज हम उस क्रांति को उलटे रास्ते पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। उससे देश नष्ट होगा, उसके साथ हम नष्ट होंगे और हमारे वे वीर सपूत, जिनको हम याद कर रहे थे, जिन्होंने त्याग किया था, वे सोचेंगे कि उनका त्याग बेकार गया। आज हम फिर से उनकी तरफ देखें और इसे प्यारे तिरंगे की आन और मान को सदा ऊँचा रखें।

20) बाहर जो हमारे मित्र देश हैं, उनकी तरफ हम दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं। और खास तौर से वह जो **साम्राज्यवाद** में फँसे हैं, उनको हम कहना चाहते हैं कि हमारा साथ उनके संग रहेगा। जहाँ भी अन्याय और लड़ाई है, वहाँ हम लोगों के साथ हैं और सदा रहेंगे। हम चाहते हैं कि दूसरे देशों में जहाँ के लोग गरीब हैं, जहाँ दबे हुए हैं, जहाँ लोग अत्याचारों से लड़ रहे हैं, उनको भी आजादी की ताजी और जानदार हवा मिले।

21) आपकी तरफ से और हमारे जो पुराने नेता थे, उनके नाम से भारत की तरफ से आज मैं यह प्रतिज्ञा करती हूँ कि हम इस भारी काम में चाहे देश के अन्दर, चाहे देश के बाहर, अत्याचार से लड़ने के काम में, अन्याय से लड़ने के काम में और अपने देश को ऊपर उठाने के काम में मिलकर सेना में जैसा अनुशासन होता है वह अनुशासन रख कर गांधी जी के, पंडित जी के, अपने बड़े-बड़े नेताओं के रास्ते पर हम लोग कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ेंगे और थोड़े ही दिनों में, थोड़े ही महीनों में और थोड़े ही सालों में इस भारत को दिखायेंगे कि हम नया जीवन बना सकते हैं।

22) अब मैं चाहती हूँ कि मेरे साथ मिलकर आप वह पुराना नारा लगायें, जो नेताजी सुभाष बोस ने हमको दिया था। यह नारा देश की शक्ति का नारा है। मैं चाहती हूं कि आप, सब मिलकर मेरे साथ इस नारे को तीन बार बोलें और याद रखें कि यह आवाज एक छोटी आवाज नहीं है, एक महान देश की आवाज है, और महान देश की आवाज को कोने-कोने में, दूर-दूर के पहाड़ों तक पहुँचाना चाहिए। उनको प्रेरणा देनी चाहिए और उनकी हिम्मत और उत्साह बढ़ाना चाहिए जो पुराना उत्साह था, आज उसको हमें फिर से जीवित करना है।

जय हिंद।

बोध प्रश्न

1) वाक्यों के अंत में कोष्ठक में दिये गये किसी एक सही शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

   i) 15 अगस्त, 1947 को दिल्ली के लाल किले पर ..... ने तिरंगा झंडा फहराया। (महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल)

   ii) पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक बार महात्मा गांधी को ..... कहा था। (बापू, राष्ट्रपिता, जादूगर)

   iii) सत्य में ..... शामिल है। (निडरता, ईमानदारी, विनम्रता)

   iv) जो देश ..... में फंसे हैं वे हमारे मित्र हैं। (पूंजीवादी, समाजवाद, साम्राज्यवाद)

   v) महिलाएँ अपनी ..... से हमको मजबूत करें। (सहनशक्ति, श्रमशक्ति, त्यागशीलता)

2) नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं, इनमें से कुछ वाक्य कथ्य की दृष्टि से सही हैं, कुछ गलत। बताइए कि कौन से वाक्य सही हैं और कौन से गलत।

   i) अहिंसा, सत्य और स्वदेशी का संदेश जवाहरलाल नेहरू ने दिया था।
   ( ) सही ( ) गलत

   ii) हम अपने देश की आर्थिक स्थिति तभी सुधार सकते हैं जब अपने ही देश की वस्तुओं का प्रयोग करें। ( ) सही ( ) गलत

   iii) समाजवाद लोकतंत्र का ही एक अंग है। ( ) सही ( ) गलत

   iv) देश को आगे बढ़ाने के लिए गरीबी और पिछड़ेपन से लड़ना जरूरी है।
   ( ) सही ( ) गलत

   v) जयहिंद का नारा इन्दिरा गांधी ने दिया था। ( ) सही ( ) गलत

3) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर केवल दो-तीन पंक्तियों में दीजिए।

   i) श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा दी गई अहिंसा की परिभाषा लिखिए?

   .....

   .....

   ii) स्वदेशी का अर्थ समझाइए?

   .....

   .....

   iii) लेखकों का देश के प्रति क्या कर्तव्य है?

   .....

   .....

   iv) 15 अगस्त, 1966 को लाल किले पर दिये गये भाषण में इन्दिरा गांधी ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

   .....

   .....

v) पिछड़ेपन से लड़ने के लिए क्या करना चाहिए?

.....

.....

4) नीचे कुछ शब्द-समूह दिये गये हैं। प्रत्येक समूह में कोई एक शब्द ऐसा है जिसकी उस शब्द-समूह से संगति नहीं बैठती। शब्द को बताइए।

i) अहिंसा, शांति, निरस्त्रीकरण, शीतयुद्ध, ( )

ii) अध्यापक, लेखक, व्यापारी, कलाकार ( )

iii) हरिजन, विद्यार्थी, आदिवासी, अल्पसंख्यक ( )

iv) व्यक्तिवाद, समाजवाद, साम्राज्यवाद, प्रजातंत्र ( )

v) उन्नति, प्रगति, क्रांति, विकास ( )

5) नीचे दिये आरेख में क, ख, ग खंडों में उचित शब्द लिखिए।

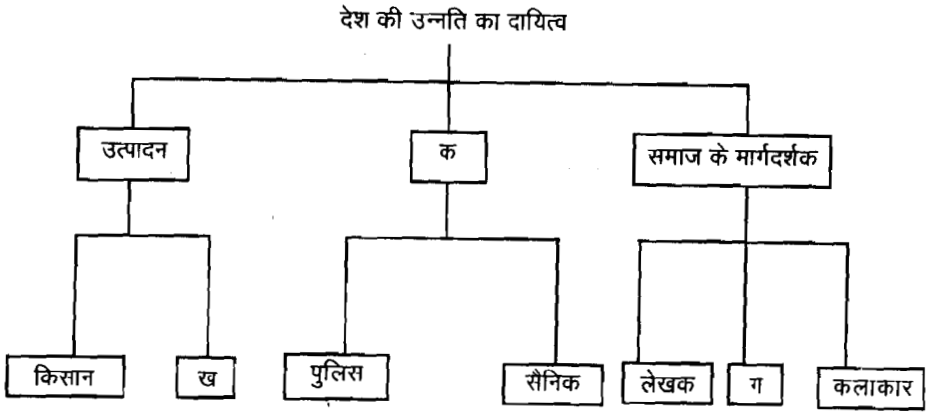

6) नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i) महात्मा गांधी को ..... कहा जाता है।

ii) ..... भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

iii) सुभाष चन्द्र बोस ने ..... का नारा दिया।

iv) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की पहली ..... प्रधानमंत्री थी।

v) भारत एक ..... देश है।

6.3 भाषण की शैलीगत विशेषताएँ

इस इकाई में श्रीमती इंदिरा गांधी का भाषण दिया गया है। आपने इसे पढ़ते हुए महसूस किया होगा कि लेखन की भाषा और बोलचाल या भाषण की भाषा में फर्क होता है। भाषण अगर पहले से लिखा हुआ नहीं है तो वक्ता को बोलते हुए ही अपनी वाक्य रचना करनी होती है। इसलिए भाषण में लिखित गद्य की तरह लंबे, मिश्रित और जटिल वाक्य नहीं होते वरन् छोटे-छोटे वाक्य होते हैं जो कई उपवाक्यों से मिलकर बनते हैं। वक्ता अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए, बात पर बल देने के लिए और लोगों को प्रभावित करने के लिए कभी एक ही शब्द या वाक्य को कई रूपों में दोहराता है। या वह पूरे मंतव्य को ऐसे छोटे-छोटे उपवाक्यों में बाँटकर बोलता है, जिससे बात पर अधिक बल पड़े। वक्ता सुनने वालों को अपनी बातों में शामिल करने के लिए उन्हें प्रत्यक्ष संबोधित करता है, श्रोताओं के अलग-अलग वर्गों का अलग-अलग जिक्र करता है, उनसे सीधे अपील करता है। यहाँ हम

कुछ उदाहरणों और अभ्यासों द्वारा भाषण की शैलीगत विशेषताओं को समझने का प्रयास करेंगे।

6.3.1 पुनरावृत्ति

भाषण में अपनी बात को स्पष्ट करने और उस पर बल प्रदान करने के लिए वक्ता बातों की पुनरावृत्ति करता है। उदाहरण के लिए इस इकाई में दिये गये भाषण के निम्नलिखित अंशों को देखिए :

क) आज का दिन, यह 15 अगस्त का दिन भारतवर्ष के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इस दिन हमने एक नया पन्ना पलटा। उक्त वाक्य के रेखांकित वाक्यांशों में, "आज का दिन", "15 अगस्त का दिन" और "इस दिन" में कथन की पुनरावृत्ति है, जो अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त हुई है, साथ ही इसमें बात पर भी बल पड़ा है।

ख) आज भी यह उतना ही ज़रूरी है कि हमारे अंदर निडरता आए। हम गलतियों से न डरें, परिवर्तन से न डरें।

(उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित वाक्यांशों की पुनरावृत्ति अपनी बात पर बल देने के लिए है।)

ग) भाषण में पुनरावृत्ति के लिए वक्ता एक ही शब्द के कई **पर्यायवाची** शब्दों का प्रयोग भी करता है, जिससे कि बात पर बल पड़े।

प्रजातंत्र हर व्यक्ति को **एक हक** देता है, **एक बड़ा हक, एक बड़ा अधिकार** और उसको सफल बनाने के लिए कर्तव्य का भार भी आता है।

(इस वाक्य में हक और अधिकार पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग बल देने के लिए किया गया है।)

इस तरह पुनरावृत्ति के लिए वक्ता शब्द, वाक्यांश या वाक्य को दुहराता है, या बात का विस्तार करता है, पर्यायवाची शब्दों (हक, अधिकार) का प्रयोग करता है।

अभ्यास

1) नीचे कुछ पुनरावृत्ति वाक्य दिये गये हैं। इन्हें पढ़कर बताइए कि कहाँ पुनरावृत्ति है।

i) इस समय हमारे बहादुर सिपाही, हमारी बहादुर सेना हमारी सीमा पर डटी खड़ी है।

.....

.....

ii) देश को बचाने की सीमा हर गाँव में है, हर कस्बे में है, हर शहर में है।

.....

.....

iii) आप पैदावार बढ़ाएँगे, उत्पाद बढ़ाएँगे तो आपकी स्थिति भी सुधरेगी और देश की स्थिति भी सुधरेगी।

.....

.....

iv) ये दबाव हैं बाहर के, दबाव है देश में गरीबी का, दबाव है आपस में फूट का।

.....

.....

2) नीचे कुछ पुनरावृत्ति वाक्य दिये गये हैं। इन्हें पढ़कर बताइए कि इनमें पुनरावृत्ति के कारण क्या हैं — (कथ्य की स्पष्टता, बात पर बल देने के लिए, अपील)।

i) आज भी हम उनकी तरफ देखते हैं कि हमारी सभ्यता, परंपरा की ओर वे ध्यान दें, उसको ऊँचा रखें। आज भी उनकी तरफ हम देखते हैं — वे हमको शक्ति दें, अपनी सहनशक्ति से हमको मजबूत करें। आज भी हम उनकी तरफ देखते हैं, बहुत से गुणों के लिए जिस के लिए भारतीय महिला प्रसिद्ध रही है। [ ]

ii) इसलिए जैसे किसान भाइयों की मदद चाहिए, जैसे हमें अपने मज़दूर भाइयों की मदद चाहिए, उसी तरह से जो और हैं चाहे वह कारखानेदार हों, व्यापारी हों, चाहे अध्यापक हों, या जो भी काम करते हों, आपकी भी सारी ज़िम्मेदारी देश के लिए है। [ ]

iii) हमारे देश में कुछ ऐसे तबके हैं जो सदियों से पिछड़े रहे हैं, हमारे हरिजन भाई और बहन, हमारे आदिवासी भाई और बहन, हमारे पहाड़ के लोग हमारे अल्पसंख्यक लोग, उनकी तरफ हमारा विशेष ध्यान है। [ ]

6.3.2 वाक्य-क्रम

भाषण की भाषा लिखित भाषा की तरह अधिक सुगठित नहीं होती। उसमें वक्ता अपनी बातों को बोलते हुए क्रम देता है इसलिए भाषण की भाषा कुछ अव्यवस्थित होती है। उसमें शब्दों और पदों का क्रम भी लिखित भाषा से प्रायः अलग होता है।

उदाहरण : हमारे जो प्रश्न हैं, वे बहुत बड़े हैं, लेकिन ऐसे नहीं हैं कि जो हिम्मत से काबू नहीं कर सकें उन पर।

हिन्दी के वाक्यों में प्रायः पहले कर्ता, फिर कर्म और अंत में क्रिया रखते हैं। जैसे "राम स्कूल जाता है" "यहाँ "राम" कर्ता, "स्कूल" कर्म और "जाता है" क्रिया है।

उपर्युक्त वाक्य हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से सही नहीं है किंतु बोलते हुए भाषा का इस रूप में प्रयोग दोष नहीं माना जाता वरन् प्रायः इस तरह की वाक्य रचना बात के प्रभाव को बढ़ाती है। उदाहरण में दिये गये वाक्य के अंतिम उपवाक्य में "उन पर" जो सर्वनाम है क्रिया के बाद प्रयुक्त हुआ है। सही वाक्य क्रम होगा — हमारे जो प्रश्न हैं, वे बहुत बड़े हैं, लेकिन ऐसे नहीं है कि उन पर हिम्मत से काबू नहीं किया/पाया जा सके।

उदाहरणः आज बनाने का दिन है **भारत माता के नये जीवन को,** न कि तोड़ने का दिन।

इस वाक्य में क्रिया, "बनाने" कर्म "भारत माता के नये जीवन" से पहले प्रयुक्त हुई है।

सही क्रम—आज भारत माता के नये जीवन को बनाने का दिन है न कि तोड़ने का।

अभ्यास

3) नीचे के वाक्यों को सही वाक्य-क्रम दीजिए।

i) देश की सुरक्षा दूसरे देशों से, बाहर की शक्तियों से, अंदर की कमज़ोरियों से जो करनी है।

.....

.....

ii) मैं जानती हूँ कि यह भावना हमारे अंदर है, अगर इसको दबाया नहीं गया, अगर इसको उलटे रास्ते पर जाने न दिया।

.....

.....

iii) लेकिन हमारे बच्चे, उन सब दबावों को हटा सकते हैं अपने रास्ते से और आगे बढ़ सकते हैं, समाजवाद के रास्ते पर।

.....

.....

iv) परिवार एक संस्था है सर्वव्यापी जो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, व्यक्ति और समाज के विकास में।

.....

.....

v) बहुत से लोग उस धन को जो नहीं होता उनकी कमाई का खरीदते हैं ऐसी चीज़ें जिनकी होती है जरूरत उन्हें नहीं ताकि कर सकें प्रभावित उन्हें जिन्हें करते नहीं हैं वे पसंद।

.....

.....

6.3.3 उपवाक्य

भाषण में वाक्य-रचना इस तरह की जाती है, जिससे कथ्य स्पष्ट होता चला जाए और बात पर बल भी पूरा पड़े ताकि सुनने वाले प्रभावित हों। इसके लिए वक्ता उपवाक्यों का अधिक उपयोग करता है। शब्दों के ऐसे समूह को जिससे पूरा विचार प्रकट होता है, वाक्य कहते हैं। जैसे "प्रजातंत्र हर व्यक्ति को एक हक देता है"। यह वाक्य है क्योंकि इसमें शब्दों का ऐसा समूह है जिससे पूरा विचार प्रकट हुआ है। लेकिन जब कोई पूरा विचार एक से अधिक वाक्यों में प्रकट होता है और उन्हें एक ही वाक्य में प्रस्तुत किया जाता है तब उनमें से प्रत्येक को उपवाक्य कहते हैं। जैसे "यह ठीक है कि यह जिम्मेदारी सरकार की है, लेकिन उतनी ही जनता की भी है।" इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं— पहला "यह ठीक है कि यह ज़िम्मेदारी सरकार की है" दूसरा — (लेकिन) "उतनी ही जनता की भी है।"

यहाँ यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि बोलने और लिखने, दोनों तरह की वाक्य रचनाओं में उपवाक्यों का प्रयोग होता है किंतु बोलने की भाषा में उपवाक्यों का प्रयोग बहुत अधिक होता है, जिसे हम इन्दिरा गांधी के उपर्युक्त भाषण में देख सकते हैं।

भाषण में ये उपवाक्य पूरी वाक्य रचना में बिखरे होते हैं और अगर हम इन्हें लिखने की भाषा में बदलें तो भाषण में प्रयुक्त वाक्य रचना की तुलना में लिखा हुआ वाक्य छोटा और गठा हुआ होगा।

उदाहरण : भाषण का वाक्य— हमारे कलाकार हैं, लेखक हैं, विचारक हैं, उनकी ज़िम्मेदारी दूसरी तरह की है और वह जिम्मेदारी है कि नयी पीढ़ी को, सारे देश को मार्गदर्शन दें, सीधे रास्ते पर चलना सिखायें। (31 शब्द)

लिखने की भाषा में वाक्य रचना : हमारे कलाकारों, लेखकों और विचारकों की जिम्मेदारी दूसरी तरह की है। वे नयी पीढ़ी और सारे देश को मार्गदर्शन दें और सीधे रास्ते पर चलना सिखायें। (26 शब्द)

उदाहरण : भाषण का वाक्य— अपने घर में, अपने गाँव में, अपनी दुकान में, किस तरह से स्वदेशी को बढ़ाएँ, अपनी भावना में कैसे स्वदेशी लाएँ यह चीज़ है, ये बड़े उसूल हैं, जिन पर हमकों चलना है। (33 शब्द)

लिखित वाक्य— अपने घर, गाँव, दुकान में किस तरह स्वदेशी की भावना को बढ़ाएँ, यही वह उसूल है जिन पर हमको चलना है। (21 शब्द)

अभ्यास

4) नीचे लिखे वाक्यों को लिखने की भाषा में बदलिए।

i) हम आज़ादी की लड़ाई को भूल गये हैं, भूल गये हैं शहीदों के बलिदान को, उनके त्याग को और इसीलिए आज हम भटक रहे हैं, ठोकरें खा रहे हैं।

.....

.....

ii) आज हमें सोचना होगा कि हमारी मंजिल क्या है, हमें कहाँ जाना है, हमारा लक्ष्य क्या है। जब तक हम अपना लक्ष्य तय नहीं करेंगे, अपनी मंजिल नहीं जानेंगे, यह नहीं सोचेंगे कि हमें कहाँ पहुँचना है तो हम ऐसे ही अँधेरे में हाथ-पाँव मारते रहेंगे।

.....

.....

.....

iii) आइए, आप हम सब मिलकर एक नयी राह बनायें। सोचें, कि वह कौन-सा रास्ता है जिस पर चलकर हम अपनी समस्याओं, अपनी कठिनाइयों, अपनी तकलीफों का हल ढूँढ सकें।

.....

.....

.....

6.3.4 संबोधित करना

भाषण में वक्ता अपने श्रोताओं को सीधे संबोधित करता है। इसलिए उसकी भाषा संबोधन की भाषा होती है। जैसे वाक्य कुछ इस तरह से आरंभ होते हैं— **"आप जानते हैं कि"**, **"यहाँ पर खड़े होकर"** ··· **"हमारे किसान भाई"** ···· **"मजदूर भाइयों"** ····· **"मैं यहाँ बता देना चाहता हूँ** ····" आदि। वक्ता कई बार अपने श्रोताओं को अलग-अलग वर्गों में बाँटकर उनसे संबंधित बिन्दुओं पर अपने भाषण को केंद्रित करता है। इन बिन्दुओं को हम उपर्युक्त भाषण में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। उदाहरण के लिए इस भाषण में इंन्दिरा गांधी किसानों को संबोधित करते हुए अपनी बात निम्नलिखित रूप में आरंभ करती हैं— **"हमारे किसान भाई,** आप हैं देश की बुनियाद, आपकी जनसंख्या सबसे अधिक है.....।" गद्य लिखते हुए हम इस तरह का संबोधन प्रयुक्त नहीं करते। इस तरह के संबोधन से जहाँ वक्ता श्रोताओं से सीधे अपने को जोड़ता है वहीं उसके वक्तव्य में आत्मीयता और अपील का भाव भी आता है।

6.4 संबोधन कारक

हम एक लड़के को बुलाने के लिए कहते हैं। 'ए! लड़के!' सभा में कई लोगों को संबोधित करने के लिए कहते हैं 'भाइयों! बहनों!' इस तरह बुलाने के शब्दों को ही व्याकरण में संबोधन कारक कहते हैं। कई लोग 'भाइयों! बहनों!' बोलते हैं जो गलत है। अनुस्वार का प्रयोग यहाँ नहीं होता। निम्नलिखित वाक्यों में अंतर देखिए-

मैंने अपने भाइयों को बुलाया

भाइयो! आप लोगों से मेरी अपील है.....

संबोधन कारक की रचना को हम निम्न प्रकार से देखेंगे।

	एक वचन	बहुवचन
पुल्लिंग	बालक! लड़के! भाई चाचा!	बालको! लड़को! भाइयो चाचाओ!
स्त्रीलिंग	लड़की! बहन! माता! बहू!	लड़कियो! बहनो! माताओ! बहुओ!

यहाँ हमने हिंदी में सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले संबोधन के उदाहरण देखें। संस्कृत भाषा में संबोधन कारक के कुछ अन्य रूप भी मिलते हैं। इनका बोलचाल में प्रचलन नहीं है। लेकिन आप साहित्य का अध्ययन करें तो ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलेंगे। हम आगे मूल शब्द के साथ संबोधन कारक के कुछ उदाहरण दे रहे हैं।

मूल शब्द	संबोधन	मूल शब्द	संबोधन
प्रभु	प्रभो!	देवी	देवि!
राजन्	राजन्!	आर्या	आर्ये!
आर्य	आर्य!	सीता	सीते!

अभ्यास

5) निम्नलिखित शब्दों के दोनों वचनों में संबोधन कारक रूप लिखिए।

	संबोधन कारक रूप	
मूल शब्द	एक वचन	बहुवचन
1) दोस्त		
2) कवि		
3) छात्र		
4) बालिका		
5) खिलाड़ी		
6) रिक्शा वाला		

6.5 सारांश

इस इकाई में आपने स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी के भाषण का अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त भाषण शैली की विशेषताओं एवं भाषण की भाषा और लिखित भाषा के अंतर का अध्ययन किया है और संबोधन कारक का प्रयोग करना सीखा है।

इकाई को पढ़ने के बाद अब आप :

- राष्ट्र की एकता और उन्नति के संदर्भ में एक नागरिक के कर्तव्य की व्याख्या कर सकते हैं।
- भाषण की शैलीगत विशिष्टताएँ बता सकते हैं।
- भाषण की भाषा और लिखित भाषा में भेद कर सकते हैं।
- संबोधन कारक को परिभाषित कर सकते हैं और उसका सही प्रयोग कर सकते हैं।

6.6 शब्दावली*

3) **दर्शन** : ज्ञान की वह शाखा जिसमें ईश्वर, आत्मा, जीव, पदार्थ, मृत्यु आदि प्रश्नों पर विचार किया जाता है।

4) **अहिंसा** : हिंसा का निषेध — जैन और बौद्ध धर्मों तथा गांधी जी ने अहिंसा के सिद्धांत को पेश किया था जिसमें दूसरे प्राणियों की हत्या का निषेध तो था ही, किसी को मन, वचन और कर्म से सताना भी हिंसा माना जाता है।

स्वदेशी : अपने देश की — स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वदेश की बनी वस्तुओं के प्रयोग पर जोर दिया गया था और इसे स्वदेशी का आंदोलन कहते थे।

5) **विचारधारा** : विचारों का वह व्यवस्थित रूप जिसमें विचारों की एक निश्चित प्रणाली बनती है। जैसे-सामजवाद, पूँजीवाद, फासीवाद, साम्यवाद आदि।

विधान : कानून, नियम, कायदे।

6) **उसूल** : आदर्श, उर्दू **शब्द** — "अस्ल" का बहुवचन।

8) **समाजवाद** : जब कोई राष्ट्र अपने यहाँ विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषमताओं को कम करके समता लाने की कोशिश करता है तो उसके इस प्रयत्न को समाजवाद कहा जाता है।

प्रजातंत्र : लोकतंत्र : एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली जिसमें सत्ता जनता के हाथ में पहुँचती है, जो एक निश्चित अवधि के लिए अपने प्रतिनिधि को चुनकर उनके माध्यम से शासन करती है।

9) **ग्रामीण** : गाँव का, (नगरीय — नगर का)

12) **अल्पसंख्यक** : जो संख्या में कम हो। जैसे भारत में मुसलमान, ईसाई आदि धार्मिक मतावलंबी अल्पसंख्यक हैं, इनकी संख्या कम है। हिंदुओं की संख्या अधिक है। वे बहुसंख्यक हैं।

अल्प = कम, बहु = ज़्यादा।

13) **श्रद्धांजलि** : श्रदा अर्पित करना (श्रद्धा + अंजलि)

19) **साम्राज्यवाद** : अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक लाभ के लिए किसी राष्ट्र द्वारा अपनी सीमाओं को विस्तार देने के प्रयास की प्रवृत्ति साम्राज्यवाद है। यह ज़रूरी नहीं है कि इसके लिए साम्राज्यवादी देश उस राष्ट्र को सीधे अपने अधीन करे।

* बायीं तरफ की संख्या पैरा संख्या है।

6.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

श्रीमती इन्दिरा गांधी : **चुनौती भरे वर्ष**, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

6.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) जवाहरलाल नेहरू ii) जादूगर iii) निडरता iv) साम्राज्यवाद

v) सहनशक्ति

2) i) गलत (गांधी जी) ii) सही iii) सही iv) सही

v) गलत (सुभाषचंद्र बोस)

3) i) अहिंसा का अर्थ है शांति, एक दूसरे से मिलजुलकर रहना दूसरों की विचारधारा का आदर करना व अपने विधान के अनुसार रहना।

ii) स्वदेशी का अर्थ है जहाँ तक संभव हो अपने ही देश की बनी वस्तुओं का प्रयोग करना।

iii) लेखकों की ज़िम्मेदारी है सारे देश और नयी पीढ़ी को मार्गदर्शन देना और सीधे रास्ते पर चलना सिखाना।

iv) इन्दिरा गांधी ने यह प्रतिज्ञा की थी कि देश के अंदर और बाहर अत्याचार और अन्याय से लड़ने, देश को ऊपर उठाने, अनुशासन रखते हुए गांधी जी आदि महान नेताओं द्वारा बताए मार्ग पर हम एक साथ आगे बढ़ेंगे।

v) नये विचारों को अपनाएँ और अंधविश्वासों को मिटाएँ।

4) i) शीतयुद्ध ii) व्यापारी iii) विद्यार्थी iv) व्यक्तिवाद v) क्रांति

5) क) सुरक्षा ख) मजदूर ग) विचारक

6) i) राष्ट्रपिता ii) जवाहरलाल नेहरू ii) जयहिंद iv) महिला

v) कृषिप्रधान/लोकतांत्रिक

अभ्यास

1) i) हमारे बहादुर, हमारी बहादुर, हमारी सीमा

ii) हर गाँव में, हर कस्बे में, हर शहर में

iii) पैदावार, उत्पादन

iv) दबाव की चार बार आवृत्ति

2) i) बात पर बल

ii) अपील

iii) कथ्य की स्पष्टता

3) i) दूसरे देशों, बाहर की शक्तियों और अंदर की कमज़ोरियों से देश की सुरक्षा करनी है।

ii) अगर इसको दबाया नहीं गया, इसको उलटे रास्ते पर जाने न दिया तो मैं जानती हूँ कि यह भावना हमारे अंदर है।

iii) लेकिन हमारे बच्चे अपने रास्ते से उन सब दबावों को हटा सकते हैं और समाजवाद के रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं।

iv) परिवार एक सर्वव्यापी संस्था है जो व्यक्ति और समाज के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

v) बहुत से लोग उस धन को जो उनकी कमाई का नहीं होता, ऐसी चीज़ें खरीदने में खर्च करते हैं जिनकी उन्हें ज़रूरत नहीं होती ताकि उन्हें प्रभावित कर सकें जिन्हें वे पसंद नहीं करते।

4) i) हम आज़ादी की लड़ाई और शहीदों के त्याग और बलिदान को भूल गये हैं इसीलिए आज हम भटक रहे हैं, ठोकरें खा रहे हैं।

ii) आज हमें सोचना होगा कि हमारा लक्ष्य क्या है, जब तक हम अपना लक्ष्य तय नहीं करेंगे तब तक हम ऐसे ही अँधेरे में हाथ-पाँव मारते रहेंगे।

iii) हम सभी को मिलकर नयी राह बनानी है और अपनी समस्याओं का हल ढूँढना है।

5)

	एक वचन	बहुवचन
1)	दोस्त!	दोस्तो!
2)	कवि!	कवियो!
3)	छात्र!	छात्रो !
4)	बालिके!	बालिकाओ!
5)	खिलाड़ी!	खिलाड़ियो!
6)	रिक्शे वाले!	रिक्शेवालो!

अनुकार्य

श्रीमती इन्दिरा गांधी के भाषण के पैरा 12 एवं 13 को ध्यान से पढ़िए और उन्हें निबंध की भाषा में रूपांतरित कीजिए। यह ध्यान रहे कि पैरा में व्यक्त किये गये सभी विचार सुरक्षित रहें।